# अध्याय : 1

## विष्णु प्रभाकर : व्यक्तित्व एवं नाटककार

अध्याय : 1

# विष्णु प्रभाकर : व्यक्तित्व एवं नाटककार

## विष्णु प्रभाकर : व्यक्तित्व एवं नाटककार

विष्णु प्रभाकर समकालीन हिन्दी साहित्यकारों में एक यशस्वी नाम हैं। बहुमुखी प्रतिभासंपन्न साहित्यकार विष्णु प्रभाकर उच्च स्तर के कलाकार हैं। जिन्हें साहित्य का मुख्य स्वर मानव की सहज मानवता को जागृत करना ही रहा हैं। ऐसे हिन्दी के प्रख्यात लेखक एवं नाटककार विष्णु प्रभाकर के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर अब हम विचार करते हैं। किसी भी प्रसिध्द कलाकार का व्यक्तित्व बड़ा ही जटील होता हैं। उसके व्यक्तित्व के आयामों को स्पष्ट करना आसान नहीं हैं। फिर भी उस कलाकार के जीवन के कुछ ऐसे बिंदू होते हैं, जिससे उसका व्यक्तित्व उभरकर हमारे सामने आ जाता है।

### जन्म :-

श्री विष्णु प्रभाकर का जन्म उत्तरप्रदेश में जिला मुजफ्फरनगर के एक छोटे से कस्बे मीरापुर में 21 जून 1912 को हुआ। बचपन के बारह वर्ष उन्होंने मीरापुर में ही बितायें। इनके पिता का नाम दुर्गाप्रसाद और माता का नाम महादेवी हैं। प्रभाकरजी के जीवन निर्माण में माता-पिता का बहुत बड़ा योगदान रहा है। विष्णु प्रभाकर के चार भाई हैं। साथ में चचेरे भाई भी परिवार से जुड़े हुये हैं। श्री दुर्गाप्रसादजी के पुत्रों का परिवार इस तरह अब तक संयुक्त परिवार के रूप में बना हुआ हैं।

### बचपन :-

अपनी बारह वर्ष की आयु तक विष्णु प्रभाकरजी अपने जन्मस्थान मीरापूर में ही रहे। आगे पढ़ने के लिए आप मामा के पास पंजाब में हिसार आ गये

थे। यही पाँच वर्ष तक पढ़ते रहे। आप के बचपन के बारह वर्ष मीरापुर में बहुत लाड-प्यार में बीते थे। परंतु जब आप आगामी शिक्षा प्राप्ति के लिए मामाजी के पास पंजाब चले गये, तो एक संयुक्त परिवार के और विशेषकर माँ के स्नेह से आप वंचित रहे। स्वभाव से ही आप भावुक होने के कारण इस अभास को गहरे स्तर तक अनुभव करते रहे। आपकी माँ ने आँखों में आँसू भरकर कुछ बनने के लिए आप को अपने से अलग किया था। इस प्रकार माँ के ममताभरे आँचल के सकून से भी आप छिन गये थे। कुछ बातें ऐसी हुई जिनके कारण आप के बाल मनपर गहरी चोट लगी। कभी कभी तो परिस्थिति अत्यन्त कटू हो उठती थी और इन कारणों से आपका स्वभाव और भी जटील होता गया, इसी अहसास में जाने-अनजाने अवस्था से पूर्व बड़े होने की भावना का जन्म हुआ। बहुत ही छोटी अवस्था में संघर्ष का अनुभव होने के कारण परिपक्वावस्था शीघ्र ही आ गई। बचपन से आपकी लेखनमें रूचि थी। इसके पीछे माता और मामाजी की प्रेरणा रही है।

बचपन के संस्कार, आनेवाले भविष्य के सुचक होते हैं। माता महादेवी आपके परिवार में परदे का त्याग करनेवाली पहली सुसंस्कृत शिक्षित नारी थी, जिन्होंने अपने दुःखों से अधिक बच्चों के भविष्य की चिन्ता की थी। आप पढ़-लिखकर कुछ बन जाये, यही एक सपना लेकर महादेवी जीवन बिता रही थी। आप के पिता दुर्गाप्रसाद छोटी-सी तमाकू की दूकान चलाते थे। वें पढ़े-लिखे न होने के कारण घर-गृहस्थी में बहुत रूचि नहीं थी। बच्चों के लालन पालन और शिक्षा का भार आप की माता पर ही था। सच्चे अर्थ में विष्णुजी के सर्जन क्षेत्र में स्वयं आपकी माता ही आदि गुरू थी। इस बचपन की शिक्षा ने आपके साहित्यिक जीवन को एक नया आयाम दिया हैं।

## शिक्षा और कार्य :-

विष्णुजी ने अपनी सोलह वर्ष की अल्प आयू में हिसार के चन्दुलाल एंग्लो वैदिक स्कूल से सन 1929 में द्वितीय श्रेणी में मैट्रिक की परीक्षा पास की। मैट्रिक पास होने के बाद आप का कॉलेज में जाकर सर्वोच्च शिक्षा प्राप्त करने का और स्कॉलर बनने का सपना था। लेकिन गाँव में परिवार की आर्थिक परिस्थिती बहुत ही खराब थी। इस आर्थिक विषमता के कारण आप आगे की शिक्षा प्राप्त नहीं

कर सके। और इस संघर्ष का सामना करने के लिए आपने इस खेल-कुद के दिनों में ही नौकरी का मार्ग अपनाया। मामाजी ने आपको एक पशु-पालन फार्म में दफतरी बनवा दिया। इस तरह आपको नियति ने अतित और भविष्य से कितनी बेरहमी से काट दिया था। आप एक किशारे युवा होने से पूर्व ही प्रौढ बनने पर विवश हो गये थे। आपको लगता था कि इस जीवन से मृत्यू बेहतर है। भविष्य की चिन्ता के कारण और सुखी जीवन की दृष्टि से परीक्षा भी देते थे। आपका यह संघर्षमय जीवन आपको आगे बढ़ने से नहीं रोक सका। हिन्दी भूषण की परीक्षा में आपने पूरे प्रान्त में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। श्री विष्णु प्रभाकर ने हिन्दी में प्रभाकर तक, संस्कृत में प्राज्ञ तक और अंग्रेजी में बी·ए· तक की परीक्षाएँ पंजाब विश्व विद्यालय लाहौर से पास की। मई 1929 से अप्रैल 1944 तक गवर्नमेण्ट कैटल फार्म पर पहले दफतरी फिर क्लर्क के रूप में काम किया। लेकिन राजनीतिक गतिविधियों से जुड़े रहने के कारण पुलिस की निगरानी में रहना पड़ा। जब आप प्रान्तव्यापी तलाशियों के शिकार बने, तब इंस्पेक्टर ने आप से कहा था, "एक क्षण में तुम्हें बर्खास्त करवा सकता हूँ, जेल भी भिजवा सकता हूँ। पर तुम लेखक हो, तुम्हें परेशान नहीं करना चाहता। तुम इस्तीफा देकर यहाँ से चले जाओ।"[1]

अन्त में जून 1944 में 15 वर्ष की नौकरी से त्यागपत्र देकर सदा-सदा के लिए पंजाब छोड़ दिया। त्यागपत्र देने के बाद निश्चित ही आप को आर्थिक संकट से गुजरना पड़ा। फिर भी इस संघर्ष की स्थिति में जीवन की चुनौती का सामना करने का जो साहस आपको मिला, वह नौकरी के कार्यालय में किसी भी तरह नहीं मिल सकता था। नौकरी करने के और त्यागपत्र देने के और भी अवसर आये। स्थानिक राजनैतिक कार्यकर्ताओं के साथ समाज सुधारक हिन्दी प्रचार तथा पारसी रंगमंच का कार्य किया। आर्य समाज के सक्रिय सदस्य रहे। इसी कारण ही आपकी प्रारम्भिक रचनाओं में आर्य समाज का प्रभाव दिखाई देता हैं। लेकिन शुध्दि आदि कुछ बातों को लेकर बाद में आर्य समाज के सक्रिय सदस्य नहीं रहें त्यागपत्र देकर अलग हो गये। 31 मार्च 1946 तक आयुर्वेद महामंडल देहली में अकाउण्टेंट के पदपर रहे। उसके बाद वहाँ से त्यागपत्र दे दिया और स्वतंन्त्र लेखन के सहारे जीवन-यापन करने का निर्णय कर लिया। लेकिन सरकार के निमंत्रण पर आकाशवाणी

के देहली केन्द्र पर सितम्बर 1955 से 31 मार्च 1957 तक नाटक निदेशक के रूप में कार्य किया। भारत स्वतन्त्र होने के कारण आकाशवाणी के अधिकारीयों को हिन्दी लेखकों की आवश्यकता पड़ी। आकाशवाणी से जुड़ने के कारण रूपक और नाटक लिखने में पारंगत हो गये और आपको जीवन-यापन की सुविधा प्राप्त हुई। अतः आपकी आर्थिक परीस्थिती तो सुधर गई लेकिन रचनात्मक स्वाधीनता के लिए यह नौकरी भी आपको अपने मार्ग की बाधा लगने लगी। और एक बार फिर चुनौतियाँ स्वीकार कर इस पद का त्याग किया। आकाशवाणी से त्यागपत्र देने के बाद हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर बम्बई के स्वामी श्री नाथूराम प्रेमी और श्री यशपाल जैनजी के आग्रहपर उन्होंने शरदचन्द्र चट्टोपाध्याय की जीवनी "आवारा मसीहा" लिखने का कार्य अपने जीवन के चौदह वर्ष व्यतीत करके हिन्दी साहित्य को अमूल्य रत्न दिया।

श्री विष्णु प्रभारकजी का साहित्य के क्षेत्र में आने का महत्वपूर्ण कारण आपका परिवेश रहा है। प्रभाकरजी को पढ़ने-लिखने का शौक बचपन से ही था। लेकिन परिवार की आर्थिक स्थिति बिगड़ जाने के कारण चाहकर भी उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर सके। और आपको छोटी आयू में ही नौकरी करनी पडी। ऐसी परिस्थिति में आपके अन्तरमन का संघर्ष और मानसिक घात-प्रतिघात के परिणाम स्वरूप विष्णुजी को कलमका ही सहारा लेना पड़ा। और इस साहित्य-सृजन को रूचि के कारण आप नौकर न बनकर एक श्रेष्ठ साहित्यकार के रूप में हमारे सामने आये।

## श्री·विष्णु प्रभाकर का परिवार :-

श्री विष्णु प्रभाकर के वंशजों का इतिहास हमें श्री चिरंजीलाल से प्राप्त होता हैं जो विष्णुजी के दादाजी हैं। चिरंजीलाल के तीन बेटे, जिनके नाम दुर्गाप्रसाद, दारकाप्रसाद और विशवम्भर सहाय हैं। तीनों बेटे शुरू में सम्मिलित रहते थे।

श्री विष्णु प्रभाकर के पिता दुर्गाप्रसाद पढ़े-लिखे नहीं थे। लेकिन धर्म-कर्म में उनकी बहुत रूचि थी। श्री विष्णु प्रभाकर की माता महादेवी एक शिक्षित और सुसंस्कृत नारी थी। जिन्होंने अनेक कष्टों को सहकर बच्चों को पढ़ाया। इसलिए विष्णु प्रभारक आज भी कहते हैं, "मेरे जीवन निर्माण में दो नारियों का बहुत

बड़ा योगदान रहा हैं। इनमें इस मेरी माताजी महादेवी और दूसरी सहधर्मिणी सुशीला प्रभाकर।"[2] विष्णु प्रभाकर को ब्रम्हानंद, महेशप्रसाद गुप्त, कैलासचन्द्र अग्रवाल और प्रल्हाद गुप्त आदि चार भाई हैं। इसमें विष्णुजी ब्रम्हानंदजी से छोटे और क्रम में तीसरे हैं, जो उनके परिवार के साथ ही रहते हैं। शुरू में सभी भाई संयुक्त परिवार के रूप में रहते थे। लेकिन इस समय अलग-अलग रहते हैं। आज भी सब में संयुक्त परिवार जैसा ही स्नेह बना हुआ हैं।

विष्णुजी का विवाह 26 वर्ष की आयु में 30 मई 1938 ई· में श्रीमती सुशीला प्रभाकर से हुआ। श्रीमती सुशीला प्रभाकर ने मैट्रिक तक पढ़ाई करने के बाद प्रभाकर की परीक्षा पास की। सुशीलाजी ने ट्रेनिंग की परीक्षा पास करने के बाद जे·के·हंर्पा स्कूल में सर्विस की। उन्हें गाने-बजाने का बहुत शौक था। वह एक आदर्श नारी के रूप में जीवन-यापन कर रही थी। वह अपने चार शिशुओं का लालन-पालन करते हुए पति को साहित्य सृजन में प्रोत्साहन देती थी। लेकिन दुर्भाग्य से कैंसर जैसी बिमारी से जुझते-जुझते 8 जनवरी, 1980 ई· को सुशीलाजी ने मुस्कुराते हुए अपने प्राण त्याग दिये। जैसे कि विष्णुजी की लेखनी ही टूट गई। विष्णुजी ने अपनी डायरी में लिखा हैं, "काश वह देख पाती। संवेदना संदेश भी आ रहे हैं। अभी बहुतों को पता नहीं हैं। कोई आए या न आए मैं अभी भी समझं नही पा रहा कि मैं कैसे जीवन काटूँगा, पर कटेगा अवश्य। मुझे समझ लेना होगा कि उनकी स्मृति किसी को परेशान न करें। सब उन्हें प्यार से याद करते रहें। मैं उनकी स्मृति संजोए-संजोए अन्तिम साँस लू। उनकी स्मृति में कुछ कर सकूँ।"[3]

श्रीमती सुशीला प्रभाकर को लेखक की पत्नी होने के साथ अनेक मुसीबतों का सामना करना पड़ा। मृत्यू के अन्तिम क्षण तक सुशीला को अपने बच्चों की चिन्ता थी।

श्री विष्णु प्रभाकर के दो पुत्र तथा दो पुत्रियाँ हैं। बड़ी लड़की अनिता का विवाह नवीन कुमार गोयल से हुआ। वह शाहदरा में हिन्दी की अध्यापिका हैं। तीन शिशुओं की माता हैं। प्रभाकरजी का बड़ा लडका अतुलकुमार एम·एस·सी· हैं, जो लघुउधोग क्षेत्र में काम करता है। इनका विवाह अनुराधा से हुआ। दो

शिशुओं के पिता है। अपने पिता के साथ दिल्ली में रहते हैं। प्रभाकरजी का दुसरा लड़का अमित कुमार इलेक्ट्रिकल इंजिनियर हैं। जो कानपुर के कॉटन मिल में काम करते हैं। उनका विवाह मृदूला से हुआ हैं। प्रभाकरजी की दूसरी लडकी अर्चना रानी का विवाह अखिलचन्द्र से हुआ। अर्चना रानी ने सोशल वर्क में एम॰ए॰ पास किया। और अब वह मंदबुध्दि बच्चों की पाठशाला में सोशल वर्क की अध्यापिका हैं। इस प्रकार विष्णुजी का परिवार समाज में एक आदर्श परिवार है।

विष्णुजी के नाम की कहानी :- ?

विष्णुजी के नाम की कहानी में उनके नाम के साथ जो "प्रभाकर" शब्द जुड़ा हुआ हैं, उसका रहस्य यहा हमें उद्घाटित करना हैं। उस सुधार युग में देवी-देवताओं और महापुरूषों के नाम पर संतान का नाम रखने की परिपाटी थी। इसलिए उनके माता-पिताने बड़े बेटे का नाम ब्रम्हा, आपका नाम केवल विष्णु और तीसरे लड़के का नाम महेश रखा था। श्री विष्णुजी को घर के लोग (प्यास) मे विष्णुसिंह या विष्णु दयाल कहकर पुकारते थे। प्रायमरी स्कुल में मास्टर साहब ने भी रजिस्टर में विष्णु दयाल ही नाम लिखा। जब विष्णुजी के मामाजी ने विष्णुजी की माँ से कहा कि विष्णु को उचित शिक्षा प्राप्ति के लिए पंजाब भेज देना और फिर विष्णु प्रभाकर पंजाब में हिसार पहुँच गये। वहाँ के आर्य समाजी स्कूल के अध्यापकने विष्णुजी वैश्य वर्ण होने के कारण विष्णुजी का "विष्णु गुप्त" नाम उचित समझा। जब विष्णुजी को सरकारी फार्म में नौकरी मिल गई, तो वहाँ के सम्बन्धित क्लर्क ने विष्णुजी के सर्विस बुकपर उनका नाम "विष्णु दत्त" लिखा। क्योंकि कार्यालय में पहले से ही कई गुप्ता मौजूद थे एक और गुप्ता बढ़ जाने से कार्यालय की दृष्टि से असुविधा हो सकती थी। तब से विष्णुजी "विष्णु दत्त" कहलाये गये।

श्री विष्णुजी ने जब से लेखन कार्य आरम्भ किया। तो आप अपना नाम सिर्फ "विष्णु" ही लिखते रहें। लेकिन एक सम्पादक महाशय को विष्णु नाम बहुत ही छोटा लगने लगा। तब सम्पादकजी को विष्णुजीके "हिन्दी प्रभाकर" परीक्षा उत्तीर्ण होने की जानकारी थी तब विष्णुजी का नाम उन्होंने "विष्णु प्रभाकर" कर दिया। यह नाम विष्णुजी को भी अधिक प्रिय लगा और अपना यही नाम रखने का आपने निश्चय किया।

इस नाम के रहस्य और सिलसिले के कारण अनेक मजेदार बातें हो गई। कुछ लोग "विष्णु प्रभाकर", "प्रभाकर माचवे", और "कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर" इन तीनों लेखकों को एक ही व्यक्ति समझने लगे। भले इन तीनों का साहित्यिक क्षेत्र में अलग-अलग अस्तित्व क्यों न हो, फिर भी एक का श्रेय दूसरे को मिलता रहा। विशेषतः अनेक घटनायें विष्णु प्रभाकर और प्रभाकर माचवे के बीच में घटित हो गई। और मजेदार बात तो यह हो गई कि, "विष्णु प्रभाकर माचवे" यह दोनों का सम्मिलित नाम बन गया। इसी नाम के चक्कर में ही अनेक प्रिय-अप्रिय प्रसंगो से गुजरना पड़ा। यहाँ तक कि इस नाम का चक्कर गुप्तचर विभाग के लोग और पुलिस भी न समझ सकी।

मेरी एक सहयोगी प्राध्यापिका ने विष्णुजी का सही नाम जानने के लिए पत्रद्वारा विष्णुजी से जानकारी हासिल की। इस पत्र के उत्तर में विष्णुजीने यह लिखा कि, "मेरे नाम का जो सिलसिला चलता रहा। उस सिलसिले को मैं भी अच्छी तरह से नहीं समझ पाया। फिर भी मैं यह बताना चाहता हूँ कि मेरा असली नाम तो मैं भी नहीं जानता। जबसे मुझे साहित्यिक क्षेत्र में ख्याती प्राप्त हो गई हैं, तब से मैं ज्यादातर "विष्णु प्रभाकर" इस नाम से ही जाना जाता हूँ। और मेरा यही नाम बैंक की पुस्तिका में भी लिखा हुआ है, और आप भी मुझे इसी नाम से ही जान ले।" [1]

इस तरह विष्णुजी के नाम की कहानी बड़ी ही दिलचस्प है, जिनके नाम ने इतने गुल खिलाये हो, शायद ही कोई ऐसा दूसरा साहित्यकार हिन्दी में हो।

श्री विष्णु प्रभाकरजी का व्यक्तित्व :-

श्री विष्णु प्रभाकरजी का व्यक्तित्व सबसे निराला और सबसे पृथक हैं। यथार्थ और आदर्श का अपूर्व समन्वय आपके व्यक्तित्व की विशेषता है। आपके व्यक्तित्व का ही शायद प्रभाव हैं कि आपको अकसर भ्रम से मर्यादावादी लेखक माना जाता है। लेकिन आप मर्यादावादी लेखक नहीं है। आप शुध्द यथार्थवादी कथाकार और सामाजिक सम्बन्धों की विकृतियाँ के निर्मम चित्रकार रहे हैं। श्री विष्णु प्रभाकर गांधीवादी तथा आदर्शवादी हैं। नैतिक मूल्यों को पहचानने में आपको गांधीवाद से सहायता

ली हैं। एक लेखक जो पढ़ता है और लिखता हैं,उसमें वह अपने पठन में और लेखन में अपने आपको जोड़ता हैं। और उसकी सही तलाश हमें उसके साहित्य में लेखकीय व्यक्तित्व रूप में मिलती है। विष्णुजी मानव मन की गहराइयों मे उतरकर समस्याओं के मूल स्वरूप की खोज करते है। आप मानव मन की गहरी पकड रखनेवाले प्रबुध्द, संवेदनशील एवं सात्विक वृत्ति के साहित्यकार है। आपके साहित्य में हृदय की अपेक्षा मस्तिष्क का चिन्तन वर्तमान हैं। विष्णुजी का मन रोमानी नही हैं।[९] आपकी सभी कृतियों में मानवीयता का स्वर सुनाई देता है।

श्री विष्णु प्रभाकर के दो व्यक्तित्व हैं,जो निरन्तर संघर्ष करते रहे हैं। आपको अपने व्यक्तित्व में कुछ कमजोरिया नजर आती है। परन्तु उनसे हार मानने को आप कदापि तैयार नहीं है। जीवन के अन्तिम क्षण तक संघर्ष करने के लिए विष्णुजी तैयार हैं। और यही आपके जीवन की नियति है, शक्ति है। इन्ही विशिष्टताओं के कारण विष्णुजी का व्यक्तित्व निखरा हुआ हैं।

1· **वेष-भूषा :-**

विष्णुजी वेष-भूषा से साहित्यकार कम और नेता अधिक लगते हैं। खादी पहननाही विष्णुजी अधिक पसंद करते है। बाल्यावस्था में ही विष्णुजी का मन खादी की ओर आकर्षित हुआ। उस समय कॉंग्रेस की एक सभा मे खद्दर का कुर्ता-धोती पहने पाँच वर्ष के एक बालक ने भाषण दिया था। उस बच्चे ने अपने भाषण में सब लोगों से खद्दर पहनने के लिए प्रार्थना की और उसी समय विष्णुजी के बालक मन ने यह निश्चय किया कि वे हमेशा खद्दर पहनना ही पसंद करेंगे। आज भी श्री विष्णु प्रभाकर खादी पहनते हैं।

विष्णुजी खादी की नुकीली टोपी,खादी का ही पायजमा, कुर्ता और जवाहर जैकेट पहनते हैं। आपके सभी कपडे साफ सुथरे और शिकन विहीन होते हैं। आपके चेहरेपर चमक हैं। आप रंग से गोरे हैं। नख तिखे है, आवाज बँधी हुई। बोलने का अंदाज प्रभावशाली हैं। विष्णुजी उस समय से लेकर आज तक बड़े ही लगन से खादी को अपनाये हुए है। इस तरह विष्णुजी की वेश-भूषा अत्यन्त सादी है।

2· **स्वभाव :-**

डॉ·राजलक्ष्मी नायडू के अनुसार विष्णुजी स्वभाव से अत्यन्त सज्जन और शान्त है। गम्भीरता उनके स्वभाव का एक विशेष गुण रहा है। आप अपना अधिक से अधिक समय चिन्तन में व्यतीत करते हैं। एकान्त विष्णु प्रभाकर को अधिक प्रिय है। स्वाभिमानी विष्णु प्रभाकर स्वतन्त्र साहित्यकार जीवन बितानेवालों में से एक विशिष्ट स्वभाव के व्यक्ति हैं। विष्णुजी एक स्नेही कलाकार और आत्मीयता रखनेवाले महान लेखक है।

3· **दिनचर्या :-**

आप अपने जीवन का प्रत्येक दिन नियम के अनुसार बितातें है। आप नित्य सवेरे पाँच बजे के पहले ही उठ जाते हैं। उसके बाद भ्रमण के लिए निकल पड़ते है और सात बजे से पूर्व ही लौटते हैं। इसी समय विष्णुजी पढ़ने-लिखने का सभी काम करते है। डेढ़ बजे के बाद कुछ समय प्रकाशन गृह में, कभी सभा-समारोह में, कभी किसी विशिष्ट व्यक्ति से भेंट, मित्रों के साथ उपहार गृहों में विनोद चर्चा करते है। रात के सात या आठ बजे घर लौट आते है। आपकी दिनचर्या का क्रम एक रूपरेखा की तरह बना हुआ हैं। कुछ समय आपको गृहस्वामी, लेखक, पति एवं पिता आदि भूमिकाओं में व्यतीत करना पड़ता है। कभी-कभी दोपहर में सस्ता मंडल साहित्य में सम्पादक के रूप में कार्यालय में काम करते हैं। और शाम को नियमित रूप से कनॉट प्लेस स्थित काफी हाऊस में साहित्यकारो के बीच बैठकर घण्टों चर्चा करते हैं।

4· **रूचियाँ :-**

अपने जीवन में प्रत्येक व्यक्ति को कुछ ना कुछ अभिरूचियाँ होती हैं। और अपनी उस अभिरूचियों के कारण हर एक व्यक्ति जिन्दगी की राह पर चलते-चलते किसी एक क्षेत्र में अपना स्थान निश्चित करता है।

श्री विष्णु प्रभाकरजी को कई प्रकार की अभिरूचियाँ है। उनमें भ्रमण करना भी आपकी रूचि है। आपने अब तक काफी भ्रमण किया है। विष्णुजी अगम्य स्थानों पर अनेक बार गये है। हिमालय की दुर्गम घाटियों और पहाड़ों तक का सफर

प्रभाकरजी ने किया है। देश विदेश की यात्रा के साथ-साथ सारा भारत भी घूम लिया हैं।

विष्णुजी की न जाने कितनी अभिरूचियाँ साधनों के अभाव में घुटकर मर गई। पढ़ने-लिखने का शौक तो विष्णुजी को बचपन से हैं। और इसी शौक के कारण आपको कई नौकरीयाँ त्याग देनी पडी। इसी त्यागमयी भूमिका ने ही विष्णुजी को लेखक अवश्य बना दिया। नहीं तो आप "आवारा मसीहा" जैसी महान कृति का निर्माण नहीं कर सकते थे। आपकी यह पढ़ने-लिखने की अभिरूचि अब दुर्भाग्य से धन्धा बन गई हैं। डाक-टिकटों और सिक्के इकठ्ठे करके उनका संग्रह करने का शौक भी विष्णुजी रखते थे। विष्णुजी अपनी रूचि का भोजन करने के लिए कभी आग्रह नहीं करते। आप अत्यन्त सात्विक भोजन और वह भी अल्प मात्रा में करते हैं। आपको मीठे भोजन में अब तनिक भी रूचि नहीं है। आपने अपने स्वयं के भोजनपर ही नियम लादे हैं।

5· साहित्य-साधना :-

श्री विष्णु प्रभाकर ने बड़े लम्बे समय तक साहित्य-साधना की हैं। और आज भी यह साधना आपने निरन्तर जारी रखी है। साहित्य के लगभग सभी क्षेत्रों में आपने अपनी लेखनी का प्रयोग किया है। विष्णुजी को बचपन से ही साहित्य में रूचि रही है। और आपने अपनी रूचि के अनुसार ही साहित्य-साधना की है।

साहित्य के क्षेत्र में आने का महत्वपूर्ण कारण विष्णुजी का परिवेश रहा है। जीवन के प्रारम्भ में ही विष्णुजी को जिन कठिन परिस्थितियोंसे गुजरना पड़ा, जिन्हें आप कभी नहीं चाहते थे। ऐसी परिस्थिति में आप अपने को उपेक्षित और अपमानित महसूस करते रहे। इसी प्रतिक्रिया स्वरूप अन्तर्व्दंव्द का जन्म हुआ। अपनी उस व्यथा को व्यक्त करने के लिए आपने लेखनी का सहारा लिया। सरकारी नौकरियों के कारण अन्तर का संघर्ष तीव्र हो उठा। अन्तर की भावना को व्यक्त करने की इच्छा बलवती हो गयी और आगे वही इच्छा साहित्य के कई रूपों में प्रकट हुई। और यह साहित्य के रूप भावूक मन की भावूकता के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं।

श्री विष्णु प्रभाकर का अध्ययन व्यापक है। साहित्य की सभी प्रमुख विधाओं में आप सफलता के साथ लिखते रहे हैं। पढ़ने-लिखने का शौक तो आपको बचपन से ही था। बचपन में आपकी दूकान में तमाकू के टोकरों के साथ एक बेकार पुस्तकों का टोकरा रहता था। उसमें जो धार्मिक पुस्तके रहती थी इन्ही पुस्तकों को पढकर श्री विष्णु प्रभाकर ने साहित्य में रुचि लेनी आरम्भ की। विष्णुजी ने अपनी पढ़ने की रुचि के बारे में स्वयं लिखा हैं कि - "मेरी पढ़ने की रुचि के पीछे मेरे मामाजी की प्रेरणा रहती थी। वे मेरी भावनाओं का ख्याल करते थे।"[4] अपने बालक जीवन में शिक्षा प्राप्त करते करते विष्णुजी ने साहित्य के क्षेत्र में पदार्पण किया विशेष रूप से हिन्दी, इतिहास, संस्कृत और धर्मशिक्षा में आपकी रुचि अधिक थी। और आपको अपनी रुचि के अनुसार साहित्य साधना का पौधा खड़ा कर दिया। प्रारम्भ में जैसा कि हो सकता था भावना के उच्छवासों व्दारा अपने को व्यक्त किया। इसलिए प्रारम्भ मे आपने गद्य काव्य लिखे, कविता भी लिखी। लेकिन उसका क्षेत्र आर्य समाज तक ही सीमित रहा। उसके बाद आपने अपनी लेखनी का झुकाव कहानी की ओर मोड़ दिया। लेखक के कहानीकार जन्म सन 1934 में "स्नेह" नामक कहानी मे हुआ। आपकी प्रारम्भिक कहानियाँ पत्र-पत्रिकाओं में छपती रही। बहुत बाद में कहानी संग्रह के रूप में प्रकाशित हुई। कहानी लिखते-लिखते ही आप उपन्यास की ओर प्रवृत्त हुए। लेकिन कहानी संग्रह की तुलना में आपके उपन्यास कम हैं। विष्णुजी के केवल पाँच ही उपन्यास प्रकाशित हुए हैं।

श्री विष्णु प्रभाकर कहानी से उपन्यास की ओर क्यों प्रवृत्त हुए इसका जवाब स्वयं आप के शब्दों में - "नाटक की स्पष्ट ही सीमाएँ हैं, वार्तालाप और कोष्टकों की सीमाएँ हैं। कहानी की सीमाएँ हैं। कहानी में हम जीवन के किसी एक पक्ष को ले सकते हैं। किसी एक भाव के घटनात्मक इकहरे रसपूर्ण चित्रण का नाम कहानी है। या किसी अस्थायी मनोदशा परिस्थिति या वातावरण का घुमावदार चित्रण गुँथीला हो या एकदम हलका वह कहानी हो सकता हैं। परन्तु इसके माध्यम से जीवन का विशद चित्रपट प्रस्तुत करना सम्भव नहीं है। संकेतों और प्रतीकों के द्वारा ही विराट की छवि देनी पड़ती है। जीवन में वामन और विराट हैं, न विराट हैं। दोनों की स्वतन्त्र सत्ता है। उपन्यासों के मुक्त क्षेत्र में अभिव्यक्ति

पर कोई बन्धन नही हैं। उपन्यास का कैनवास विस्तृत हैं। वह सम्पूर्ण की उपलब्धि है। एक साथ कई स्तरों और धरातलों पर वह चलता है। एक दूसरे से बिलकुल भिन्न हैं। चित्र विस्तृत कैनवास पर अपनी स्वतन्त्र सत्ता के साथ उभर सकते है। कहूँगा मैने आवश्यकतानुसार अभिव्यक्ति के ये माध्यम स्वीकार कियें हैं। लेकिन अपने को मुक्त करने का आनन्द जितना उपन्यास के माध्यम से सम्भव हो सकता है। उतना कहानी या नाटक के माध्यम से नहीं।"[5]

विष्णुजी बहुत बाद में नाटकविधा की ओर अग्रसर हुए। कहानीकार के अलावा आपको नाटककार के रूप में विशेष ख्याती प्राप्त हुई। नाट्यविधा के प्रायः सभी रूपों में आपने रचना की है। आपके नाटक और एकांकी इस बात के साक्षी हैं कि आपका मन कथा साहित्य की अपेक्षा नाटक में अधिक रमा हैं। विष्णुजी पहले कहानीकार, नाटककार और बाद में उपन्यासकार के रूप में रहे। आपको प्रतिष्ठा, प्रसिध्दि एवं सफलता भी मिली। फिर भी "आवारा मसीहा" विष्णुजी की अक्षय कीर्ति का मुख्य आधार है। विष्णुजी की यह एक ऐसी कृति है जिसमें हमको साहित्य की सभी विधाओं के दर्शन हो जाते हैं। "आवारा मसीहा" की ख्याति का प्रधान कारण एक ओर जहाँ स्वयं शरत है, जिसकी जीवनी लिखी गई हैं। वहाँ दूसरी ओर इस जीवनी लेखक विष्णु प्रभाकर भी है। श्री विष्णु प्रभाकरजी के साहित्य सृजन की एक और बड़ी प्रेरणा देश-विदेश भ्रमण रही है। विष्णु प्रभाकर मानवतावादी लेखक होने के नाते सदैव "मनुष्य" विष्णुजी का लक्ष्य रहा है। विष्णुजी का सारा साहित्य उसी की खोज में आतुर है। आपने निश्चितही जीवन की विषम परिस्थितियों में रहकर साहित्य का सृजन किया। साहित्यानुराग ने ही उन्हें नौकरी के बाहर खींचकर स्वतन्त्र लेखक के रूप में स्थापित किया है। "साहित्यको समाज की श्रेष्ठतम संस्कृति का द्योतक स्वीकार करते हुए मानवता की स्थायी निधि माना हैं।"[6]

श्री विष्णु प्रभाकर का सन 1934 से लेकर आज तक लेखन का कार्य नियमित रूप से चल रहा हैं। अब तक आपकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चूकी हैं। जिनमें कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, जीवनी, यात्रा-विवरण, संस्मरण और बालसाहित्य आदि के अलावा विविध विषयों की भी अनेक पुस्तके[7] प्रकाशित हुई हैं। इसके अलावा आपने अनुवाद और सम्पादन का भी कार्य किया है।

## रचनाएँ

अ· **जीवनी**

1· आवारा मसीहा।

आ· **नाटक :-**

1· डॉक्टर §1958§

2· टगर §1988§

3· बन्दिनी §1979§

4· कुहासा और किरण §1975§

5· सत्ता के आर-पार §1981§

6· केरल का क्रान्तिकारी §1986§

7· नवप्रभात §1951§

8· गान्धार की भिक्षुणी §1982§

9· समाधि §1952§

10· युगे-युगे क्रान्ति §1970§

11· टूटते परिवेश §1974§

12· अब और नहीं §1981§

13· श्वेत-कमल

14· होरी §1955§

15· चन्द्रहार §1952§

इ· **एकांकी संग्रह**

1· इन्सान और अन्य एकांकी §1947§

2· क्या वह दोषी था ? §1951§

3· अशोक §1956§

4· बारह एकांकी §1958§

5· इस बजे रात §1959§

6· ये रेखायें ये दायरे §1963§

7· ऊँचा पर्वत गहरा पर्वत §1966§

8· मेरे प्रिय एकांकी §1970§

9· मेरे श्रेष्ठ रंग एकांकी §1971§

10· तीसरा आदमी §1974§

11· मेरे नये एकांकी §1976§

12· मेरे नये एकांकी §1976§

13· डरे हुये लोग §1978§

14· मेरे श्रेष्ठ रंग एकांकी §1980§

15· प्रकाश और परछाई

ई· उपन्यास

1· निशिकान्त

2· तट के बन्धन

3· स्वप्नमयी

4· दर्पण का व्यक्ति

5· कोई तो

उ· कहानी संग्रह

1· आदि और अन्त §1945§

2· रहमान का बेटा §1947§

3· जिन्दगी के थपेडे §1952§

4· संघर्ष के बाद §1953§

5· धरती अब भी घूम रही है §1959§

6· सफर के साथी §1960§

7· खण्डित पूजा §1962§

8· साँचे और कला §1962§

9· मेरी तैंतीस कहानियाँ §1967§

10· मेरी प्रिय कहानियाँ §1970§

11· पुल टूटने से पहले §1977§

12· जीवन-पराग §मार्मिक घटनाएँ§

ऊ· **यात्रा - विवरण**

1· जमना-गंगा के नैहर में

2· ज्योतिपुंज हिमालय

3· हँसते निर्झर दहकती भट्टी

4· हिम शिखरों की छाया में

ए· **संस्मरण**

1· कुछ शब्द : कुछ रेखाएँ

ऐ· **बालसाहित्य**

क· जीवनी -

1· शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय

2· बंकिम चन्द्र

3· सरदार वल्लभभाई पटेल

ख· बाल-एकांकी -

1· अभिनव बाल-एकांकी

2· अभिनव - अभिनय - एकांकी

3· हड़ताल

4· जादू की गाय

5· नूतन बाल-एकांकी

6· कुन्ती के बेटे

7· स्वाधीनता संग्राम

8· बच्चो के प्रिय नाटककार

ग· बाल - कहानी -

1· सरल पंचतन्त्र (दो भाग)

2· जब दीदी भूत बनी

3· तपोवन की कहानी

4· स्वराज्य की कहानी

5· घमण्ड का फल

6· मोतियों की खेती

7· हीरे की पहचान

8· पाप का घड़ा

9· गुडिया खो गई

ओ· विविध विषय

1· विविध विषय

2· समाज विकास माला

3· सम्पादित ग्रन्थ

4· अन्य सम्पादन

श्री विष्णु प्रभाकरजी के साहित्य का खजाना बहुत बड़ा है। साहित्य के सभी क्षेत्रों मे आपने अपनी कलम का प्रयोग किया हैं। और आपके इस उत्कृष्ठ कार्य को देखकर भारत सरकारने आपको अनेक बार पुरस्कार देकर सम्मानिक किया है। विष्णुजी अनेक संस्थाओं के कार्यसमिति के सदस्य रहे हैं। आपने साहित्य सम्मेलनों में विशेष-प्रतिनिधीत्व को अपनाया। विष्णुजी का साहित्य निरन्तर आगे बढता जा रहा है, आपकी इस गति पर हिन्दी साहित्य को नाज हैं। अतः हिन्दी साहित्य को यह गौरव की बात है।

नाटककार - विष्णु प्रभाकर :-

आधुनिक युग में नई पिढी के नाटककारों में विष्णुजी सर्वाधिक लिखनेवाले नाटककार हैं। नाटककार विष्णु की ममतामयी कला ने भावना के भूमिपर क्रमिक विकास पाया है। आपकी नाटयकला में अभूतपूर्व गहराई, मनोवैज्ञानिक अन्तर्दृष्टि और निखार आया है। विष्णुजी के नाटक सहज रूप से पाठक को प्रभावित करनेवाले हैं।

श्री विष्णु प्रभाकर आधुनिक युवक नाटयकारों का सफल नेतृत्व कर रहे हैं। विष्णुजी की नाटयविधा में, नये परिवर्तित समाज में बदलते हुए सम्बन्धों को

रचनात्मक रूप से रेखांकित करने के लिए सामायिक स्थितियोंपर लिखे गये नाटक मिलते हैं। आपने नाटको मे विभिन्न जीवन चित्रो द्वारा मानव-मन की क्रिया-प्रतिक्रियाओं, घात-प्रतिघात और आन्तरिक संघर्ष का अच्छा चित्रण किया हैं। हृदय की अपेक्षा मस्तिष्क की चिन्तन रेखाओं की स्पष्ट छाया हैं। "नाटक आत्मान्वेषण और आत्माभिव्यंजन की महत्वपूर्ण साहित्यिक विधा हैं। क्योंकि उसमें जीवन और समाज के विविध रूपों की अभिव्यक्ति होती हैं। इसलिए तो नाटक को लोक प्रवृत्तियों का प्रतिफलन मानते हैं।"[7]

विष्णुजी का साहित्य रोमानी न होकर यथार्थ सामाजिक जीवन से सम्बन्धित हैं। "वह या तो जीवन के कल्याण के लिए आदर्श प्रेमी हैं। जिसमें गांधीवाद का शुध्द सांस्कृतिक रूप हैं। और उनमें तर्क चिन्तित परम्पराओं का सामूहिक शिवरूप, मानव की अकांक्षा का विशाल जीवन या फिर व्यंग्यद्वारा चित्रित वर्तमान समाज व्यवस्था की नग्न ध्वंसावस्था के रूप दर्शन जिनमें उनकी कला पीडाओं को प्रतिबिंम्ब ग्रहण करके शान्त हो जाती हैं। दोनों ही अवस्थाओं में नाटककार जहाँ अपने प्रति ईमानदार हैं, वहाँ वह वस्तु के प्रति भी निश्चल है।"

नाटककार विष्णु प्रभाकर अपने नाटकों में नई जमीन तलाश करने के साथ ही आप अनेक प्रकार के प्रयोग भी करते रहें। आपके जैसा प्रयोगधर्मी नाटककार दूसरा नहीं हैं। आपके नाटकों के चरित्र इतने और अपने आस-पास के लगते है कि नाटक पढ़ते हुए ऐसा प्रतित नहीं होता कि हम नाटक पढ़ रहे हैं। हमे लगता है कि हम जीवित व्यक्तियों के मध्य बैठकर उनके क्रिया कलापों को देख रहे हैं। विष्णुजी ने अपने साहित्य में कल्पना के आकाश में नही, जीवन की कठोर भूमिपर अपने उपकरण जुटायें हैं। राष्ट्रीय विचारों से ओत-प्रोत होकर आपने अपने पात्रों में अन्तर्व्दन्द उपस्थित करके कला प्रदर्शित की हैं। आपकी दृष्टि यथार्थ से जुझकर व्यापक, गहन, निर्मल और स्निग्ध बन गई है। हमारे समाज और जीवन से यथार्थ चित्रण भावना का परिपाक, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण विष्णुजी की नाट्य कला की विशेषताएँ हैं। विष्णुजी के साहित्य की आत्मा -उनका सहज मानव गुण हैं। क्रान्तिचन्द्र सौनरेकसा ने कहा है, "विष्णुजी जीवन में गहरे पैठते हैं। वहाँ विस्तार भी खोजते दिखाई देते हैं। वे विचारक के रूप में समाज के

नव-निर्माण की ओर प्रगतिशील हैं। और सामाजिक यथार्थ उनकी पर-भूमि हैं। हवाई किले वे नहीं गढ़ते, मार्क्सवादी की तरह तर्क करते हैं। समाज को बदलने के लिए मानवता का इतिहास अपने हाथों से निर्माण करने के लिए।" १

डॉक्टर नगेन्द्र लिखते हैं - "विष्णु नाटक के क्षेत्र में पर्याप्त ख्याति प्राप्त कर चुके है। वे हिन्दी के उन लेखकों में हैं जिनके लिए साहित्य सृजन सेवा या विनोद न होकर एक साधना है। उनकी साधना एकनिष्ठ है। उसमें सेवा को दाम्भिक चैतन्य या विनोद का हलकापन नहीं हैं। यही कारण हैं कि वे अपने मार्ग पर विश्वास के साथ आगे बढ़ते जा रहे हैं। उनके साहित्य की मूलात्मा उनका सहज मानव गुण हैं। उनकी चेतना और विचारधारा पर आज के युगदर्शन गांधीवाद का गहरा प्रभाव है। यद्यपि उन्होंने अपने को गांधीवाद (को) परिभाषा में नहीं बांधा है। इनके नाटकों का आधार सहज मानव गुण है, जो नाटककार के व्यक्तित्व का प्रधान आकर्षण हैं।"

श्री विष्णु प्रभाकर ने अपने सभी नाटकों में मनुष्य के व्यक्तिगत और समाजगत वैषम्यों और विविध जटील समस्याओं से संघर्ष का यथार्थवादी चित्र प्रस्तुत किया है। आपने अपने नाटको में समस्या से जुझते मानव, सामन्ती और पूँजीवादी जीवन की जर्जरता, समाज की पुरानी मान्यताओं और मर्यादाओं के खोखलेपन, मनुष्य की दुर्बलताएँ, उसकी आशा निराशा और अवसादपूर्ण जीवन का ऐसा चित्र विष्णुजी ने अपने नाटकों में किया है कि हमें इन सारे दृश्यों को देखकर जीवन से जुझते हुए आगे बढ़ने का बल मिलता है।

विष्णुजी के नाटकों के अध्ययन से यह प्रतीत होता है कि विष्णुजी समाज के एक आमूल परिवर्तन के अभिलाषी हैं। हिन्दी साहित्य जगत में विविध विधाओं पर लेखन करने के बाद भी विष्णुजी का (विशेष) स्थान नाटककार के रूप में ही हैं। सन 1957 से लेकर अब तक कुल (14) नाटकों की रचना की हैं। इन नाटकों में विष्णुजी ने मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक, सामाजिक रूपान्तरित एवं राजनैतिक सभी प्रकार के नाटक लिखे हैं।

उनके नाटकों का वर्गीकरण निम्न प्रकारसे किया जा सकता हैं -

## नाटकों का वर्गीकरण

| अ | ब | क | ड | इ |
|---|---|---|---|---|
| मनोवैज्ञानिक | राजनैतिक | ऐतिहासिक | सामाजिक | रूपान्तरित |
| 1· डॉक्टर | 1· कुहासा और किरण | 1·नवप्रभात | 1· युगे युगे क्रान्ति | 1· होरी |
| 2· टगर | 2· सत्ता के आर-पार | 2· समाधि | 2· टूटते परिवेश | 2· चन्द्रहार |
| 3· बन्दिनी | 3· केरल का क्रान्तिकारी | 3·गान्धार की भिक्षुणी | 3·अब और नहीं | |
| | | | 4·श्वेतकमल | |

विष्णु प्रभाकरजी के उपर्युक्त सभी नाटको में विशेष मौलिकता दिखाई देती हैं। आपने हर तरह के नाटक लिखे हैं। आपके नाटकोंपर गांधीवाद की गहरी छाप हैं। गांधीजी ने सामाजिक तथा राजनैतिक समस्याओं का समाधान जिस रूप में दिया हैं, उनसे प्रभावित होकर विष्णुजी ने अपने नाटकों का सृजन किया हैं। उन सभी नाटकों पर विचार करेंगे ।

### मनोवैज्ञानिक नाटक :-

साहित्य मानव के भावों और मनोवेगों का एक गहरा अध्ययन है। मानव की मानसिक प्रक्रियाओं की जटीलता को मनोविज्ञान द्वारा सुलझाया जाता है। मानव मन में जो इच्छाएँ उत्पन्न होती हैं वे विविध प्रकार के रूप धारण कर समस्याएँ निर्माण करती हैं। साहित्यकार अपने साहित्य में इन्ही समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न करता हैं।

श्री विष्णु प्रभाकर एक सफल नाटककार हैं। आपने अपने "डॉक्टर", "टगर", "बन्दिनी" में मनोवैज्ञानिकता को प्रधानता दी हैं।

### 1· डॉक्टर :-

श्री विष्णु प्रभाकर का यह मनावैज्ञानिक नाटक 1958 में प्रकाशित हुआ। यह नाटक मूलतः एडलर के क्षति पूर्ति सिध्दान्तपर आधारित है। मानव को एक क्षेत्र की क्षति दूसरे क्षेत्र में महान बना देती हैं। इसकी कथावस्तु सन 1950-60 के काल में भारतीय जनमानस के संक्रान्ति युगपर केन्द्रित है। जब नारी शिक्षा

के प्रचार ने अशिक्षित नारियों के जीवन में त्रासदी खडी कर दी। भारतीय नवयुवक आधुनिकता के नाम पर अपनी निर्दोष पत्नी को दण्ड देने लगे। यह नाटक एक पति द्वारा परित्यक्ता पत्नी की क्रिया-प्रतिक्रियाओं का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

इस नाटक की नायिका मधुलक्ष्मी अशिक्षित होने के कारण पति इन्जीनियर सतिशचन्द्र शर्मा से परित्यक्ता होती है। किन्तु यह घटना उसे प्रतिशोध से भर देती हैं। और वह अपनी इस क्षति को पूरा करने के लिए अपने भाई की सहायता से पढ़कर डॉक्टर अनीला बन जाती है। अनीला को अपने कर्तव्य के प्रति असीम श्रध्दा होने के कारण उसका नर्सिंग होम जल्द ही रूग्णों का आशा स्थान बन जाता है। डॉ॰अनीला के जीवन में तब संघर्ष खड़ा होता है, जब उसे त्यागने वाला पति अपनी दूसरी पत्नी को मरणासन्न दशा में लेकर नर्सिंग होम में आता है। और यही डॉ॰अनीला के मन में संघर्ष उठता है - डॉक्टर की कर्तव्य भावना और नारी की प्रतिशोध भावना के बीच। सतीशचन्द्र की दूसरी पत्नी के उपचार की समस्या को लेकर ही डॉक्टर अनीला के मन में कर्तव्य और संस्कार भावना का गहन एवं भयानक, अन्तर्द्वंद होता है। किन्तु अन्त में अपने मित्र डॉक्टर केशव के समझाने पर वह रोगी मोहिनी का सफल ऑपरेशन कर देती है। मन में गहरा संघर्ष होते हुए भी डॉक्टर की कर्तव्य भावना मन में बसी हिंसक मधुलक्ष्मी को पराजित कर देती हैं। नाटक के अन्त में डॉक्टर अनीला का अतीत और वर्तमान रूप उसे ठुकराने वाले पति को आश्चर्यचकित कर देता है। कुलमिलाकर कथानक नारी मनोविज्ञान पर आध्दृत होकर एक विशेष स्थिति का सजीव अंकन करता है।

यह नाटक एक पति द्वारा परित्यक्ता पत्नी की क्रिया-प्रतिक्रियाओं का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इस नाटक में शिक्षित और बुध्दिवादी नारी के वैवाहिक सम्बन्धों में व्याप्त अस्तित्व और गहन अंतर्द्वंद्व को चित्रित किया है। "नहीं, नहीं, नहीं करूँगी, मैं उसका इलाज नहीं करूँगी। मैं उसे मार डालूँगी।"[8] नाटककार ने चरित्र द्वारा यह सत्य रूपायित करने का प्रयास किया है कि पुरूष द्वारा तिरस्कृत नारी प्रतिहिंसा की भावना से प्रेरित होकर कितना भयंकर रूप धारण कर सकती है। "नहीं, आप बिलकुल नहीं जानते। आप नारी को नहीं जानते। .................. आप चोट खाई हुई नागीन को नहीं जानते।"[9] किन्तु

साथ ही नारी सुलभ दया और विवेक की उद्रेक तथा आत्मनियंत्रण द्वारा वह नारी की सहज प्रकृत स्वभाव का परिचय भी दे सकती है। प्यार और घृणा का तनाव और खिंचाव विकर्षण दोनों परस्पर भावों के मूलभूत एकता की मनोवृत्ति का स्वाभाविक निर्वाह उत्कृष्ठ मनोवैज्ञानिक शैली में हुआ है।

"इस नाटक की डॉक्टर अनीला में हीनत्व कुण्ठा के मनोविकारों से क्षतिपूर्ति की प्रतिक्रिया को उत्तेजना मिली है। जिससे परित्यक्ता होने पर अशिक्षित से डॉक्टर बन गई। प्रतिशोध ग्रंथिवश पहले तो अनीला को अपनी सौत का अस्पताल में दाखिला करना अत्यन्त अखर उठा, किन्तु नाट्यकार को विवेचन सिध्दान्त के अनुसार यहाँ मनोग्रन्थि का परिष्कार दिखाना था। मानसिक द्वंद्ववश्यता के सहारे सम्पूर्ण नाटक मानसिक घटनाओं का सफल निर्वाह करता हुआ परिष्कृति की उससीमा पर आ पहुँचा, जहाँ विवेचन द्वारा मनोविकृतियों का निराकरण होता है। विवेचन सिध्दान्त के अनुसार नाटक का अन्त क्षतिपूर्ति की प्रतिक्रिया में हुआ है। रंगमंच पर जहाँ मनोवैज्ञानिक स्वोक्तिपरक संवादों द्वारा मानसिक द्वंद्वो की छाया पात्रों के अभिनय में देखते हैं। वहाँ चेतन मन प्रश्न का उत्तर अन्तरमन का विरोध चेतन मन करता है।"[10]

विष्णुजी ने इस नाटक में अनीला के उदात्तीकरण, प्रतिशोध, वात्सल्य, आत्मनियंत्रण, प्रेम, घृणा, दया आदि भावों को प्रस्तुत किया है। नाटक की कथावस्तु का गठन रहस्यपूर्ण हुआ है। नाटककार ने डॉक्टर अनीला के अतिरिक्त डॉक्टर केशव, डॉक्टर सईदा, बड़े भाई दादा, नीरू, सतीशचन्द्र शर्मा और गोपाल आदि सभी चरित्र भी बड़ी कुशलता के साथ नाटक में उभारे हैं। सभी पात्र संवाद एवं नाट्य व्यापार द्वारा अनीला को ही अभिव्यक्त करते हैं। सम्पूर्ण नाटक को मंच पर भी प्रस्तुत किया गया है। विष्णुजी ने यह पूर्ण मनोवैज्ञानिक नाटक लिखकर हिन्दी नाट्य साहित्य की इस अभाव की पूर्ति की है।

2· <u>टगर</u>

श्री विष्णु प्रभाकरजी का यह नाटक सन 1977 ई·में प्रकाशित हुआ "डॉक्टर" नाटक के समान यह नाटक भी मनोवैज्ञानिक धरातल पर ही आधारित

है। दोनों नाटकों के रचनाकाल में बीस वर्ष की अवधी होने पर भी लेखक को वही समस्याएँ नज़र आई, जो उन्होंने "डॉक्टर" नाटक में चित्रित की थी। नाटककार श्री विष्णु प्रभाकर ने "टगर" को अति आधुनिक बताने की कोशिश की है। लेकिन दोनों नाटकों के मूल में "संघर्ष" की भावना ही छिपी हुई है।

"टगर" यह एक ऐसी स्त्री की त्रासदी हैं, जो पति शेखर द्वारा उपेक्षित होने के बाद वह इस निर्णय पर पहुँचती हैं कि अपने पहले प्रेम और पति की बेवफाई का बदला दुनिया की समस्त पुरुष जाति से लेना चाहती हैं और बदले की आग में टगर भभक उठती है। वह प्रतिहिंसा की ओर संकेत करती हुई कहती है - "सोचा था, पुरुष जाति से बदला लूँगी। उसने मुझे एक बार छोडा है, मैं बार-बार पुरुषों को छोडूँगी।"[11] टगर का पति शेखर टगर आधुनिक न होने के कारण छोड देता है। शेखर एक प्रख्यात लेखक होने के कारण टगर जैसी साधारण नारी को पत्नी के रूप में योग्य नहीं समझता था।

अपने पति शेखर द्वारा तिरस्कृत होने पर टगर बदले की आग में जल उठती है। टगर एक जिद्दी नारी होने के कारण अपने स्वाभिमान का बदला लेना चाहती है। इस गम्भीर और भयानक चोट में वह अपना सम्पूर्ण व्यक्तित्व बदलकर पुरानी रश्मि को हटाकर आधुनिक टगर बन जाती है और वह समस्त संसार की पुरुष जाति से बदला लेना चाहती है। बदले की आग में वह कई पुरुषों का साथ देती रहती है। एक के बाद, दूसरे के बाद तीसरे पुरुष से बदला लेती है। अपने जाल में इन पुरुषों को फँसाती है। जैसा जैसा पुरुष टगर के जाल में फँसता जाता है। टगर को एक अलग-सी खुशी महसूस होती है। टगर एक-एक पुरुष के भ्रष्टाचारी जीवन को बेनकाब कर उन्हें छोड़कर आगे बढ़ती है। थोडे दिनों के बाद ही उसे इस बात का एहसास होता है कि बदले की आग में उसने स्वयं अपने आपको खोया है। स्वयं को ही बरबाद कर दिया है। टगर कहती है - "मैं अपने ही बिछाये जाल में फँस गई हूँ। यह खेल मात्र एक दम्भ है। एक छल है। नहीं, यह खेल मैं अब और न खेल सकूँगी।"[12]

अन्त में टगर का व्यक्तित्व दुनिया के सम्मुख एक हारी हुई नारी का है। नाटककार विष्णुजी ने इस नाटक के माध्यम से आधुनिक नारियों की जटील मानसिकताओं की ओर संकेत किया है। नारी की मानसिकता का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करनेवाला यह नाटक है। इस नाटक के सभी पात्र टगर के इर्दगिर्द मँडराते हैं। "टगर" की कथावस्तु "डॉक्टर" के समान ही प्रतीत होती है। दोनों नाटकों की समस्या एक है लेकिन उसके निदान-नितान्त अलग-अलग हैं।

3· <u>बन्दिनी</u>

श्री विष्णु प्रभाकर का यह नाटक 1979 में प्रकाशित हुआ है। इस नाटक की घटना अन्धविश्वास पर आधारित है। इसकी मूल कथा बंगला कथाकार प्रभातकुमार मुखोपाध्याय की "देवी" कहानी से प्रेरणा पाकर रचना की है, जो रवीन्द्रनाथ ठाकुर की मूल कथावस्तू है। "इस नाटक का प्रस्ताव लेकर श्री·वेदव्यास विष्णुजी के पास आये और विष्णुजी ने इस नाटक की रचना करने की बात स्वीकार की।"

नाटककार विष्णुजी ने इस नाटक को तीन अंकों में प्रस्तुत किया है। नाटक की कथावस्तु में कालीनाथ घर का प्रमुख व्यक्ति, माँ देवी का परम भक्त है। एक दिन कालीनाथ को रात सपने में माँ देवी आकर बता देती है कि तुम मेरी आराधना के लिए क्यों दर-दर भटक रहें हो। देवी के रूप में तो साक्षात तुम्हारे घर में उमादेवी है। दूसरे ही दिन कालीनाथ ने अपनी छोटी बहू उमा के पैर देवी समझकर छुये। तब से उमा को देवी की साक्षात मूर्ति समझने लगे। सभी लोग उसकी पूजा करने लगे। धीरे-धीरे उमा के व्यवहार में भी परिवर्तन हुआ। और उमा भी अपने को देवी ही मानने लगी। लोग श्रद्धा के भाव से उमा के दर्शन और पूजा करते हैं। उमादेवी ने अनेकों की समस्याओं का हल किया। जब एक दिन अपने ही परिवार की सावित्री का बेटा अनु ज्वर से अत्यन्त परेशान हो गया। सभी घरवालों ने बिना वैद्य के अनु को देवी के पास ही रखा। लेकिन उमादेवी उस बच्चे को बचा नहीं सकी। तब सभी लोगों की श्रध्दा चूर-चूर हो गई। लोग उमा को उलटी सीधी गालियाँ देने लगे। यहीं पर सब लोगों का अन्ध-विश्वास

नष्ट हो गया। "मनुष्य को अपने आपसे कौन बचा सका है। अन्ध-विश्वास की बलि युग-युग में शायद इसी प्रकार दी जाती रही है।"[13]

श्री विष्णु प्रभाकर ने इस नाटक के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि आधुनिक युग में भी मनुष्य किस प्रकार अंधविश्वासों के पीछे घूमता-फिरता रहता है। "बन्दिनी" नाटक अन्ध-विश्वास पर गहरी चोट करता है। फिर भी गाँवों और कस्बों में आज भी अन्ध-विश्वासों को लोग मानते हैं। उनके यहाँ आज भी देवी अवतरित होती है। इस नाटक ने लोगों की इस अंधी भावना पर करारा व्यंग्य किया है।

## राजनैतिक नाटक

### 1· कुहासा और किरण

इस नाटक की कथावस्तु एक सत्य घटना पर आधारित है। समस्यामूलक नाटकों में इस नाटक को गिना जाने लगा है। स्वाधीन भारत के सामाजिक और राजनीतिक जीवन से यह नाटक सम्बन्धित है। जिसमें स्वाधीन भारत के ही सामाजिक और राजनीतिक समस्या का चित्रण किया गया है। श्री विष्णु प्रभाकर ने नाटक को तीन अंकों में और छः दृश्यों में विभाजित किया है।

इस नाटक का प्रमुख पात्र कृष्णचैतन्य है। जिसके जीवन की कहानी यथार्थ और कल्पना के धरातल पर आधारित है। कृष्णचैतन्य की षष्ठिपूर्ति के अवसर पर उमेशचन्द्र अग्रवाल, बिपिन बिहारी और प्रभा पुष्पमाला अर्पित करके बधाई देते हैं। कृष्णचैतन्य सम्पादक अमूल्य से सशंकित रहते हैं। उनको भय रहता है कि यह अमूल्य कहीं मेरे भ्रष्टाचारी मुखौटे पर हाथ न डाले। कृष्णचैतन्य की पत्नी गायत्री भी अपने पति के इस गन्दे आचरण के कारण पति को छोड़कर अपने भाई के घर जाती है। लेकिन कृष्णचैतन्य अपनी इस शैतानी प्रवृत्ति से जरा-भी शर्मिन्दा नहीं है। क्योंकि वह सबकी दुर्बलताओं को जानता है और निश्चिंत होकर कहता है - "हमाम में सभी नंगे हैं और नंगा नंगे को क्या नंगा करेगा। किन्तु फिर भी उसके हृदय में अंतर्द्वंद्व होता है, नहीं नहीं न करे नंगा पर देखनेवाले तो देखते ही हैं।"[14]

दूसरे अंक में सुनन्दा और प्रभा ये दोनों नारियाँ भ्रष्टाचारियों के मुखौटे उतारना चाहती हैं। लेकिन अमूल्य जैसे निरपराध को ही पुलिस पकड़ती है। उमेशचन्द्र घबराये जाते हैं, तो बिपिन बिहारी यातनाओं से मुक्त होना चाहते हैं। किन्तु कृष्णचैतन्य दृढ़ता से प्रतिवाद करता हुआ कहता है कि, "तरेंगे हम तीनों, डूबेंगे हम तीनों..." इसी समय गायत्री की कार एक ट्रक से टकराने की सूचना मिलती है इसमें गायत्री मारी जाती है। मालती की दर्दभरी कहानी भी मुख्य कथा के साथ चलती है।

तीसरे अंक में भ्रष्टाचारियों के मुखौटे उतर जाते हैं। अमूल्य को छोड़ दिया जाता है। उमेशचन्द्र और बिपिन बिहारी जब चोर दरवाजे से भागते हैं, तो अमूल्य चीख उठता है - "हाँ, हम उन्हें कहीं नहीं जाने देंगे। उन्हें वही पहुँचा देंगे जहाँ उनकी जगह है। हमारे लिए देश सबसे ऊपर है। देश की स्वतन्त्रता हमने प्राणों की बलि देकर पाई थी, उसे अब कलंकित न होने देंगे।" अन्त में दोनों को गिरफ्तार किया जाता है।

नाटककार ने वर्तमान भ्रष्टाचार को नष्ट करने के लिए युवकों को यहाँ प्रेरित किया हैं। राजनीति एवं समाज में फैले हुए इस भ्रष्टाचार के कुहासे, को नष्ट करने के लिए युवकों में तेजस्विता का पनपना जरूरी है। साथ ही नाटककार ने आज के पत्रकारों की पोल इस नाटक में खोल दी है। अन्त में विष्णुजी ने अपने नाटक के द्वारा सीख दी है कि, "बलिदान कभी व्यर्थ नहीं जाता।"[16]

2· <u>सत्ता के आर-पार</u>

इस नाटक की कथावस्तु से नाटककार श्री विष्णु प्रभाकर बहुत प्रभावित हुए। और अपने साहित्यिक व्यस्तता के बीच भी इसका लेखन किया। क्योंकि विष्णुजी भगवान बाहुबली की सहस्त्राब्दी महोत्सव एवं महामस्तकाभिषेक के दिन ही इस नाटक का प्रकाशन और हो सके तो इसका मंचन भी करना उनका उद्देश्य था।

"सत्ता के आर-पार" इस नाटक में भगवान बाहुबली की कथा ही चित्रित हुई है। जिसमें बाहुबली और भरत के द्वंद्व युद्ध का वर्णन किया है। ऋषभदेव के दो पुत्र थे, जेष्ठ पुत्र भरत है, जिसके नाम से भारत देश भारतवर्ष कहलाता है

और द्वितीय पुत्र बाहुबली है, जो जैन धर्म के चौबीस तीर्थकारों में सर्वप्रथम हैं। जब ऋषभदेव अध्यात्मिक उपलब्धि के लिए वन चले जाते हैं तो जाते समय भरत को अयोध्या का राज्य और बाहुबली को पोदनपुरी का राज्य सौंप देते हैं। भरत सत्ता की भावना से ओतप्रोत होकर दिग्विजय करता है। किन्तु बाहुबली भाई होने के कारण उसके साथ युध्द करना नहीं चाहता। भरत को लगता है कि चक्र-दिग्विजय के महोत्सव के अवसर पर बाहुबली अपने चक्रवर्ती भाई को नमस्कार करेगा और चक्र का प्रतिरोध दूर हो जायेगा। किन्तु बाहुबली के न आने पर भरत ने उन्हें युध्द के लिए ललकारा। दोनों भाईयों में दृष्टियुध्द, जलयुध्द और मल्लयुध्द होता है। जिसमें बाहुबली ही जीत जाते हैं। तब भरत सत्तांध की भावना से बाहुबली पर चक्र चलाते हैं। भरत की कुटनीति को देखकर बाहुबली सत्ता का त्याग करके तप करने जाते हैं और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करते हैं। बाहुबली कहते हैं - "मेरे मन में अभी तक यह अहंकार शेष हैं कि मैं अविजित हूँ। और मैं अभी भी भरत की भूमि पर खड़ा हूँ। लेकिन यह भूमि न कभी किसी की हुई है, न होगी। यह तो सबकी माँ हैं। सचमूच अहंकार का वह काँटा मुझे सल रहा था। लेकिन अब मान और अहंकार का प्रत्यक्ष दर्शन हो गया मुझे उन्हें जान लिया मैंने। जो जान लेता हैं वह निर्मल हो जाता हैं। मैं भी निर्मल हो गया। मुक्त हो गया।"[17]

यह नाटक मानवीय धरातल पर लिखा गया है। यह तीन अंकों में विभाजित है।

3· केरल का क्रान्तिकारी

श्री विष्णु प्रभाकर ने "केरल का क्रान्तिकारी" यह नाटक भारतीय स्वाधीनता संग्राम को लक्षित करते हुए लिखा है। विदेशी सत्ता के विरूध्द अनेक विद्रोह इस देश में हुए। इस नाटक की कहानी में भी एक विदेशी सत्ता के विरूध्द किये हुए विद्रोह का ही वर्णन है। सन 1809 में "केरल का क्रान्तिकारी" "वेलुत्तम्पी" का पूरा नाम वेलायुधन था। वेलुत्तम्पी ने अपने कुशल प्रशासन और न्यायप्रियता के कारण महाराज धर्मराज और जनता का मन मोड़ लिया। राजा के विरूध्द जनन्तन से किया हुआ विद्रोह वेलुत्तम्पी ने कुचल दिया और वह पहले ताल्लुकेदार और बाद में दीवान बन गया। कुंचुनीलम पिल्लै के कूटनीति को भी असफल कर दिया।

वेलुत्तम्पी ने कई बार अपने मित्र कर्नल मैकाले से सलाह और मदद ली। लेकिन आखिर अंग्रेज बहुत ही चालाक निकले। वेलुत्तम्पी भी ब्रिटीशों की इस दुरभिसन्धि को समझ गये और फिर उन्होंने क्रान्ति का मार्ग अपनाया। अपने जीवन के अन्त तक वे फिरंगीयों से आँखमिचौली खेलते रहे। वेलुत्तम्प ने कहा - "मेरे वतन की लाल मिट्टी को लाल रक्त की जरूरत है। मैं उसकी जरूरत पूरी करूँगा। तब कम से कम रक्तदान करने का मेरा सपना तो पूरा हो सकेगा। मैं जीते-जी दुश्मन के हाथ में नहीं पडूँगा।···माँ, मुझे आशीर्वाद दो कि मैं फिर इसी देश में जन्म लूँ और·····"[18]

अपने देश के लिए वेलुत्तम्पी दलवाने आत्मसमर्पण किया, लेकिन फिरंगियों के हाथ नहीं आये। नाटककार ने कथा को गति देने के लिए वेलुत्तम्पी की चेतना को मानवी रूप देकर उसकी प्रेमिका अम्मुकुट्टी के रूप में चित्रित किया है। इस नाटक में कुछ गीतों का भी उपयोग किया गया है। कुछ मात्रा में यह ऐतिहासिक नाटक भी है और राजनीतिक भी।

## ऐतिहासिक नाटक

### 1· नवभारत

श्री·विष्णु प्रभाकर ने इस नाटक का सृजन ऐतिहासिक और पौराणिक कथा के सहारे किया है। इस नाटक की कथावस्तु सम्राट अशोक के जीवन की प्रमुख ऐतिहासिक घटना है। जिस घटना में नाटककार ने मानव की साम्राज्य लिप्सा को दिखाया है। इसी साम्राज्य लिप्सा के कारण होने वाले युध्द की भयानकता, उसमें कराहती, रौंदती हुई मानवता का सफल चित्र इस नाटक में खींचा गया है।

कलिंग युध्द के बाद प्रबल आघात के कारण अशोक के जीवन में महान परिवर्तन हो गया। अशोक के जीवन की कुछ ऐसी घटनायें, परिस्थितियाँ थी, जिनके प्रबल आघात के कारण अशोक को युध्द से घृणा हो गयी। अशोक के हृदय में जो संघर्ष हुआ, उसे भारत के इतिहास को ही पलट दिया। इस नाटक में अशोक आधुनिक मानव का प्रतिनिधित्व करता है, जो हमें आज विश्वबंधुत्व का संदेश देता है।

यह नाटक तीन अंकों में लिखा है। जिसमें प्रत्येक अंक के स्वतंत्र एकांकियों के रूप में लिखा गया है। नाटककार ने अपने कथ्य के अनुसार ऐतिहासिक पात्र एवं घटनाओं में परिवर्तन किया है। नाटक में लेखक की कल्पना सृष्टि का परिपाक भी है। संवाद प्रभावी हैं और पात्रों की संख्या भी सीमित है।

2· <u>गान्धार की भिक्षुणी</u>

इस नाटक की कथा को भारत के प्राचीन काल से लिया गया है। भारतवर्ष की सभ्यता, संस्कृति और समृध्दि की अंतिम झलक इस ऐतिहासिक नाटक में मिलती है। इस नाटक की कथा का ऐतिहासिक नायक जनेन्द्र यशोधर्मन है। यशोधर्मन और आनन्दी ये दोनों पात्र इस नाटक के प्रमुख पात्र हैं। यशोधर्मन जनता का नेता है, जिन्होंने राजनीतिक और सामाजिक कुरीतियों को कुचल दिया, अत्याचारी और विलासी राजाओं के विरोध में संघ बनाये। यशोधर्मन ने मालवा में विद्रोह का नेतृत्व करके हुणों के विरूध्द युध्द छेडा। इस विद्रोह में जनता का साथ होने के कारण मिहीर कुल को परास्त किया। मिहीर कुल के अत्याचारों की मूर्तिमयी प्रतिभाएँ भिक्षुणी आनन्दी, मालवी, शैव गुरू और श्रेष्ठी हरिगुप्त आदि हैं।

आनन्दी गान्धार की पंडिता भिक्षुणी है। उस युग की वेदना और उसकी प्रतिहिंसा के बलिदान में परिणत होते ही नाटक की कथा समाप्त होती है। उस युग में ज्यों मानवीय भावना राजाओं की अराजकता के भँवर में फँसकर नष्ट हो गयी है। वह इस नाटक में ऊपर आ गयी है। आज का भारत इस युग की कथा से बहुत कुछ सीख सकता है। नाटक की कथावस्तु इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। आज की स्थिति पर लिखा गया यह एक सार्थक नाटक है।

3· <u>समाधि</u>

इस नाटक की सम्पूर्ण कथा इतिहास पर ही आधारित है। बालादित्य और यशाधर्मन के समय देश में शान्ति स्थापित नहीं हुई थी। उन दोनों के प्रयत्न के बावजूद भी देश में राजनीतिक और सामाजिक कुरीतियों के कारण देश की सभ्यता और संस्कृति ने विकृत रूप ले लिया और देश दुर्बल होता गया। राजा और पंचायत राज दोनों से जनता का विश्वास उठ गया। हिंदू संस्कृति में संकोच आरम्भ हो

गया। जातिभेद की भावना के कारण जातीय पंचायते पैदा हो गई। इन सब बातें का इस नाटक में आभास मात्र है। उस युग के कला और साहित्य की उन्नति का चित्रण इस नाटक में दिखाया है।

"गान्धार की भिक्षुणी" नाटक "समाधि" नाटक के एक अंश रूप में ही चित्रित है।

<u>सामाजिक नाटक</u>

1· <u>युगे-युगे क्रान्ति</u>

क्रान्ति का गतिशील रूप इस नाटक में दिखाया है। किसी भी मर्यादित सीमाओं में क्रान्ति बँधी नहीं होती। इस नाटक में अतीत से वर्तमान का संघर्ष दिखाया गया है, जो सदा से चलता आया है, चलता रहा है और सदा से चलता रहेगा। नाटककार विष्णु प्रभाकर ने विवाह के क्षेत्र में चली आ रही क्रान्ति दिखायी है जो समाज किसी रूढी परम्परा को तोड़ती है। समाज के समय के अनुसार मान्यताएँ बदलती रहती है। लेकिन नया युग पुरानी पीढी की परम्परा को झकझोर देता है और नयी मान्यताएँ प्रस्थापित होती है, जो आगे की पीढी के लिए एक खोखली परम्परा ही होती है। इस प्रकार समय के चक्कर में पुरानी रूढि से नयी रूदि का संघर्ष गतिशील होता है जो निरन्तर एवं अटल है।

समाज के नेता श्री·प्यारेलाल अपने पिता कल्याणसिंह के युग की मान्यता को मसलकर विधवा विवाह करता है। वह अपनी पुत्री शारदा के युग में पुराण पन्थी बन जाता है। शारदा पुराने रीति-रिवाजों को तोड़ना चाहती है। लेकिन शारदा अपने पुत्र प्रदीप के अन्तरजातीय विवाह के समय परम्परा से जुडी रहती है। जैनेट और प्रदीप के आगे जाने का साहस अनिरूध्द और रीता करते हैं। "इन सड़ी गली परम्पराओं से चिपके रहने-से समाज रोगी ही हो सकता है। एक स्त्री और एक पुरूष को विवाह के नाम पर बाँध दिया जाए इसके अतिरिक्त शास्त्र में क्या और कोई विकला नहीं है।"[19]

इसप्रकार हर युग में क्रान्ति का सिलसिला बीते पल और वर्तमान पल में चलता रहता है। बीते पल केवल इतिहास बनकर रह जाते हैं। नाटक का प्रत्येक पात्र अपने युग के क्रान्ति का नेतृत्व करता है। समाज में बदलते हुए मूल्यों

को उजागर किया है। नाटक का कथानक मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद से मेल रखता है। प्रस्तुत नाटक के कथानक और पात्रों के माध्यम से नाटककार ने जीवन के एक बहुत बड़े सत्य को चित्रित किया है।

2· टूटते परिवेश

श्री विष्णु प्रभाकर ने इस नाटक में भी पुरानी और नई पीढ़ियों के संस्कार और मर्यादाओं का परिचय दिया है। जब किसी एक परिवार में दोनों पीढ़ियाँ एक छत के नीचे जीवन यापन करती है तो संघर्ष की स्थिति पैदा होती है। नाटक की कहानी में मध्यवर्गीय परिवार के पुरानी पीढी के संस्कार नई पीढ़ी मान्य नहीं करती।

विश्वजीत परिवार का प्रमुख है। विश्वजीत और उसकी पत्नी करूणा का एक आदर्श परिवार का स्वप्न है। जो आज के युग की आवश्यकता है। लेकिन विश्वजीत के बेटे और बेटियाँ नई पीढी का नेतृत्व करनेवाले पात्र हैं। आधुनिकता के कारण ये नई पीढी के पात्र अपनी-अपनी दुनिया बनाना चाहते हैं। उन सबको संयुक्त परिवार में एक घुटन-सी होती है। परिवार के प्रत्येक सदस्य के विचारों में भिन्नता है। विचारों की भिन्नता के कारण परिवार के विघटन का चित्र उभरता है। नाटक में नई और पुरानी मान्यताओं और मूल्यों में संघर्ष दिखाई देता है। स्वार्थ और स्वेच्छाचार के कारण आज का परिवेश टूटता जा रहा है। सामाजिक परिवेश ने आदमी को खोखला बना दिया है। आदर्श सच्चाई, नैतिकता सभी मूल्य नष्ट हो रहे हैं। यह नाटक आधुनिकता पर तीखा व्यंग्य करता है।

3· अब और नहीं

प्रस्तुत नाटक नारी के शोषण का इतिहास दोहराता है। राजनीति और धर्म का इतिहास भी नारी के आसुओं से लिखा गया है। प्राचीन काल से पीड़ा ने नारी को नहीं छोडा है। प्रस्तुत नाटक नारी के टूटे मन की कहानी है। वीरेन्द्र प्रताप और शान्ता दोनों पति-पत्नी हैं। शान्ता को सितार बजाने का औरचित्र बनाने का शौक है। इस शौक को उसका पति वीरेन्द्र दबाना चाहता है। लेकिन शान्ता अपनी बेटी शुभ्रा के सितार देखती तो उसके अन्तर्मन की लालसा जाग जाती है। पति के लगाये बन्धनों से मुक्ति चाहती है और यह मुक्ति उसे आत्महत्या

के बाद ही मिलती है। पुरूष ही नारी के शोषण का कारण है। नारी पर होने वाले अत्याचारों का वही जिम्मेदार है। नाटककार ने अपने नाटक से नारी मुक्ति का संदेश दिया है। नारी की मुक्ति बंधन में नहीं बल्कि स्वतन्त्र अस्तित्व में है।

4· श्वेतकमल

यह नाटक नारी समस्या का समाधान करता है। घर के बाहर का वातावरण स्त्री के लिए समस्या खड़ी करता है। प्रस्तुत नाटक में इसका चित्रण एक कुमारी स्त्री को घर के बाहर की समस्याओं से किस प्रकार जूझना पडता है कि चौदह सौ साल पहले स्त्री के प्रति जो परिस्थिति समाज में थी वही परिस्थिति आज भी है। आज भी स्त्री पर बलात्कार होते हैं, आज भी वह आतंकित है। इस नाटक में एक असहाय नारी का चित्रण किया है, जिस पर घर की सारी जिम्मेदारी है। वह काम की खोज में घर से निकलती है। समाज के दरिन्दे उसे निगलने के लिए आतूर हैं। अपने अरमानों को जलाकर भी वह घर के लोगों को अपनाती है। "श्वेतकमल" की नायिका बिन्दू एक दफ्तर में नौकरी करने लगती है। बिन्दू की छोटी बहन रंजना एक आदमी के प्यार में पागल होकर घर से भाग जाती है। तब रंजना आत्महत्या करती है। नीलिमा और प्रतिमा बिन्दू की और दो बहने हैं। घर में बूढी माँ भी है। बिन्दू जहाँ काम करती है वहाँ का मालिक उसके पीछे पडा है। उससे बचने के लिए बिन्दू नौकरी से इस्तीफा देती है। वह विकास नाम के युवक से प्यार करती है। लेकिन परिवार के बोझ के कारण शादी नहीं कर सकती। कुँवारी रहना ही पसन्द करती है। अपने अरमानों का गला घोटने वाली बिन्दू एक आदर्श त्यागी नारी है।

रूपान्तरित नाटक

1· होरी

यह नाटक प्रेमचन्दजी के प्रसिध्द उपन्यास "गोदान" का नाट्य रूपान्तर है। "गोदान" में अभावग्रस्त भारतीय किसान की जीवन गाथा का चित्रण है। होरी एक भारतीय किसान है। यह नाटक होरी के अन्तर्विरोधी और गुण-दोषों की सजीव कहानी है। होरी मन से बड़ा उदार है। लेकिन दरिद्रता के कारण विवश है। होरी की पत्नी धनिया एक दृढ़ साहसी और ग्राम नारी है। होरी अपनी जमीन और

घर को बचाने के लिए अपनी बलि देता है। होरी और धनिया का चरित्र यथार्थवादी है। किसानों के सभी गुण-दोषों से दोनों का चरित्र परिपूर्ण है। गोबर इन दोनों का बेटा है। वह नई पीढ़ी के असन्तोष का प्रतीक है। विष्णुजी का "होरी" एक सफल नाट्य रूपान्तर है। उसमें हमारी देहाती जीवन की आशा, निराशा, सरलता-कुटिलता, प्रेम-घृणा, गुण-दोष आदि सभी का चित्रण किया है।

2· चन्द्रहार

यह नाटक भी प्रेमचन्दजी के प्रसिध्द उपन्यास "गबन" का नाट्य रूपान्तर है। इस उपन्यास का नाट्य रूपान्तर 1952 में किया है। नाटककार विष्णु प्रभाकर ने इस नाटक में "गबन" से उपयोगी सामग्री को ही लिया है। नाटक के प्रमुख पात्र प्रेम और रामनाथ के मनोवैज्ञानिक चरित्र को बड़ी कलात्मकता और कुशलता से प्रस्तुत करने से यह नाटक सफल नाटक है। "चन्द्रहार" विष्णुजी का एक मौलिक नाट्य रूपान्तर है।

निष्कर्ष

1· स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी नाटककारों में विष्णु प्रभाकरजी का महत्वपूर्ण योगदान है। आपने अपने नाटकों में मानवीयता का सफल चित्रण किया है। विष्णुजी के नाटकों का आधार सहज मानव गुण है, जो नाटककार के व्यक्तित्व का प्रधान आकर्षण है।

2· विष्णुजी ने अपने नाटकों में समस्या से जूझते मानव, सामन्ती और पूँजीवादी जीवन की जर्जरता, समाज की पुरानी मान्यताओं और मर्यादाओं के खोखलेपन, मनुष्य की दुर्बलताएँ और उसकी समस्याएँ, मनुष्य की आशा-निराशा और अवसादपूर्ण जीवन का चित्रण किया है।

3· श्री विष्णु प्रभाकर के नाटकों की भाषा साहित्यिक प्रचलित भाषा है। आपने नाटकों की रचना रंगमंच के अनुकुल की है। आपके लगभग सभी नाटक तीन अंकों में विभाजित हैं। "डॉक्टर", "टगर", "बन्दिनी", "युगे-युगे क्रान्ति", "टूटते परिवेश", "होरी" आदि नाटक मंच पर सफलता के साथ प्रस्तुत हुए हैं।

4· आपके हर नाटक ने नाट्य-साहित्य की गरीमा बढ़ायी है। विष्णुजी के "नवप्रभात" नाटक को महाराष्ट्र शासन ने दो बार पुरस्कार देकर गौरव किया है।

5· श्री विष्णु प्रभाकर हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में नाटककार के रूप में ही अधिक प्रख्यात हैं। वास्तव में विष्णुजी ने साहित्य के सभी रूपों में अपना लेखन कार्य जारी रखा है। लेकिन नाटककार के रूप में आपको अधिक सफलता प्राप्त हुई है।

6· आपके सभी नाटकों में नारी की मानसिक व्यथा का चित्रण दिखायी देता है। विष्णुजी ने अपने नाटकों में नारी को केन्द्र में रखते हुए नारी-जीवन की समस्याओं का चित्रण करते हुए नारी-जीवन की समस्याओं को सामाजिक सन्दर्भ में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है।

संदर्भ-सूची


1. दृष्टव्य - स्वयं श्री विष्णु प्रभाकर द्वारा प्राप्त।

2. विष्णु प्रभाकर व्यक्तित्व एवं कृतित्व - डॉ. राजलक्ष्मी नायडू, पृ. 7

3. "दस वर्ष की डायरी" विष्णु प्रभाकर की प्रतिनिधि रचनायें - सं. कमलकिशोर गोयनका

4. दृष्टव्य - स्वयं श्री विष्णु प्रभाकर द्वारा प्राप्त

5. दृष्टव्य - स्वयं श्री विष्णु प्रभाकर द्वारा प्राप्त

6. स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी नाटक - विचारतत्व, अवधेशचन्द्र गुप्त, पृ. 88

7. "लोकवृत्तानुकरण नाट्य मेतन्याकत" नाट्यशास्त्र, पृ. 1-112

8. डॉक्टर (नाटक) - श्री विष्णु प्रभाकर, पृ. 52

9. वही, पृ. 51

10. विष्णु प्रभाकर, उपचेतना का छल, पृ. 141-142

11. टगर (नाटक) - श्री विष्णु प्रभाकर, पृ. 93

12. वही, पृ. 83

13. बन्दिनी (नाटक) - श्री विष्णु प्रभाकर, पृ. 78

14. "कुहासा और किरण" (नाटक) - श्री विष्णु प्रभाकर, पृ. 57-58

15. वही, पृ. 141

16. वही, पृ. 144

17. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक भाग-4, पृ. 436

18. "केरल का क्रान्तिकारी" (नाटक) - श्री विष्णु प्रभाकर, पृ. 94-95

19. "युगे-युगे क्रान्ति" (नाटक) - श्री विष्णु प्रभाकर, पृ. 67